रागी को हानि पहुँचाने वाले रोग एवं उनका प्रबंधन

कृषि कुंभ (जुलाई 2023),
खण्ड 03 भाग 02, पृष्ठ संख्या 39–40

रागी को हानि पहुँचाने वाले रोग एवं उनका प्रबंधन

डॉ. हरिकेश[1], डॉ. आर. के. यादव[2] एवं सेजल सोमवंशी[3]

[1]सहायक प्राध्यापक, प्रवक्ता कृषि
आशा भगवान बक्श सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय पूराबाजार–अयोध्या
[2]सह–प्राध्यापक, फसल कार्यिकी विभाग,
आचार्य नरेंद्र देव कृषि और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, भारत।
[3]एम एस सी सस्य विज्ञान, नैनी कृषि संस्थान, शुआट्स प्रयागराज उत्तर प्रदेश, भारत।

Email Id: anjeetaraja@gmail.com

रोग–व्याधियाँः– फफूंदजनित झुलसन एवं भूरा धब्बा रागी की प्रमुख रोग–व्याधियां है जिनका समय पर निदान उपज में हानि से रोकता है।

(अ) झुलसनः–

रागी की फसल पर पौधे अवस्था से लेकर बालियों में दाने बनने तक किसी भी अवस्था में फफूंदजनित झुलसन रोग का प्रकोप हो सकता है। संक्रमित पौधे की पत्तियों में भिन्न–भिन्न माप के आंख के समान या तर्कुरूप धब्बे बन जाते है, जो मध्य में धूसर व किनारों पर पीले–भूरे रंग के होते है। अनुकूल वातावरण में ये धब्बे आपस में मिल जाते है व पत्तियों को झुलसा देते है। बालियों की ग्रीवा व अंगुलियों पर भी फफूंद का संक्रमण होता है। ग्रीवा का पूरा या आंषिक भाग काला पड़ जाता है, जिससे बालियां संक्रमित भाग से टूटकर लटक जाती है या गिर जाती है। अंगुलियां भी आंषिक रूप से या पूर्णरूप से संक्रमित होने पर सूख जाती है जिसके कारण उपज की गुणवत्ता व मात्रा प्रभावित होती है।

रोकथामः बोआई पूर्व बीजों को फफूंदनाषक दवा मेनकोजेव, कार्वेन्डाजिम या कार्वोक्सिन या इनके मिश्रण से 2 ग्राम प्रति किलो बीज दर से उपचारित करें।

1. खड़ी फसल पर लक्षण दिखायी पड़ने पर कार्वेन्डाजिम, कीटाजिन या इडीफेनफास 1 मि.ली. प्रति लीटर पानी) या मेनकोजेव 2.5 ग्राम प्रति लिटर पानी की दर से छिड़काव करें। 10 से 12 दिन के बाद एक छिड़काव पुनः करें।
2. जैव रसायन स्यूडोमोनास फ्लोरेसेन्स का पर्ण छिड़काव (0.2 प्रतिषत) भी झुलसन के संक्रमण को रोकता है।
3. रोग प्रतिरोधी किस्मों जैसे जी.पी.यू. 45, चिलिका, शुव्रा, भैरवी, व्ही.एल. 149 का चुनाव करें।

(ब) भूरा धब्बा रोगः–

इस फफूंदजनित रोग का संक्रमण पौधे की सभी अवस्थाओं में हो सकता है। प्रारम्भ में पत्तियों पर छोटे–छोटे हल्के भूरे एवं अंडाकार धब्बे बनते है। बाद में इनका रंग

गहरा भूरा हो जाता है। अनुकूल अवस्था में ये धब्बे आपस में मिलकर पत्तियों को समय से पूर्व सुखा देते है। बालियों एवं दानों पर संक्रमण होने पर दानों का उचित विकास नहीं हो पाता, दाने सिकुड जाते है जिससे उपज में कमी आती है।

रोकथाम

1. बोआई पूर्व बीजों को फफूंदनाषक दवा मेनकोजेव, कार्वेन्डाजिम या कार्वोक्सिन या इनके मिश्रण से 2 ग्राम प्रति किलो बीज दर से उपचारित करें।
2. खड़ी फसल पर लक्षण दिखायी पड़ने पर कार्वेन्डाजिम, कीटाजिन या इडीफेनफास (1 मि.ली. प्रति लीटर पानी) या मेनकोजेव 2.5 ग्राम प्रति लिटर पानी की दर से छिड़काव करें। 10 से 12 दिन के बाद एक छिड़काव पुनः करें।
3. जैव रसायन स्यूडोमोनास फ्लोरेसेन्स का पर्ण छिड़काव (0.2 प्रतिषत) भी झुलसन के संक्रमण को रोकता है।
4. रोगरोधी किस्मों जैसे भैरवी का बोआई हेतु चयन करें।

(स) भुरड रोगः

भुरड रोग रागी के पौधों पर पैदावार के समय आक्रमण करता है। इस किस्म का रोग पौधों पर फफूंद के रूप में आक्रमण करता है द्य इस रोग से प्रभावित दानो पर भूरे रंग का पाउडर दिखाई देने लगता है, तथा कुछ समय पश्चात् ही पौधा सड़कर नष्ट हो जाता है।

रोकथामः रागी के पौधों को इस रोग से बचाने के लिए मैंकोजेब या कार्बेन्डाजिम की उचित मात्रा का छिड़काव पौधों पर करे।

(द) जड़ सडनः

इस किस्म का रोग पौधों पर अक्सर जल भराव की स्थिति में देखने को मिलता है। इस रोग से प्रभावित पौधा आरम्भ में मुरझाने लगता है, जिसके बाद पत्तियां पीली पड़ जाती है, और पौधा सड़कर खराब हो जाता है।

रोकथामः खेत में जलभराव की समस्या को खत्म कर इस रोग से बचा जा सकता है, तथा बोर्डो मिश्रण का छिडकाव खेत में जलभराव होने पर करे।

(य) पत्ती लपेटलः

इस किस्म का रोग रागी के पौधों में उसकी पत्तियों पर आक्रमण करता है द्य पत्ती लपेटल रोग की सुंडी पत्तियों पर रहकर उसका रस चूस लेती है, जिसके कुछ समय पश्चात् ही पत्तियां पीले रंग की दिखाई देने लगती है, तथा रोग से अधिक प्रभावित होने पर पत्तियां जाली की तरह दिखाई देने लगती है। जिससे पौधे का विकास पूरी तरह से रुक जाता है।

रोकथामः

इस रोग से बचाव के लिए क्लोरपाइरीफोस, कुंल्फॉस या कार्बरील का छिड़काव रागी के पौधों पर करना होता है, तथा रोग ग्रसित पत्तियों को तोड़कर हटा देना चाहिए ।